स्वामी विवेकानंद : एक महान कवि के रूप में

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

स्वामी विवेकानंद को सामान्यतः एक महान संन्यासी, ओजस्वी वक्ता, दार्शनिक, हिन्दू धर्म के महान प्रचारक, आध्यात्मिक चेतना के सजग प्रहरी, समाज-सुधारक, कला एवं संगीत मर्मज्ञ, ध्यानी-योगी और राष्ट्र-प्रेरक के रूप में जाना जाता है। यह बहुत ही कम लोग जानते हैं कि महान दार्शनिक, मनीषी और देशभक्त स्वामी विवेकानंद, लब्ध प्रतिष्ठ संत कवि कबीर और गुरुनानक की कोटि के एक महान कवि भी थे। यद्यपि उनकी रचित कविताएँ, गीत और भक्ति के श्लोक संख्या में बहुत कम हैं, तथापि वे अत्यंत प्रिय हैं। उनकी कविताएँ केवल काव्य-रचना नहीं, अपितु वेदांत-दर्शन, राष्ट्रचेतना, आत्मबल, मानवता और आध्यात्मिक उन्नयन की सशक्त अभिव्यक्तियाँ हैं। उनका काव्य उनके जीवन-दर्शन का स्वाभाविक विस्तार है, सीधे - सहज रूप में आध्यात्मिक परमानन्द और रहस्यवादी अनुभूतियों का प्रवाह है, जहाँ विचार, भाव और अनुभूति एकाकार हो जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ। उनका पूर्व नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त उच्च न्यायालय के अधिवक्ता थे और माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक प्रवृत्ति की, संस्कारित तथा काव्यप्रिय महिला थीं। माता से उन्हें भक्ति, श्रद्धा और संस्कृत साहित्य का संस्कार मिला, जबकि पिता से तार्किक बुद्धि, आधुनिक दृष्टि और निर्भीकता।

नरेन्द्रनाथ बचपन से ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने दर्शन, इतिहास, साहित्य, संगीत और विज्ञान का गहन अध्ययन किया। वे संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी और हिन्दी पर समान अधिकार रखते थे। उनके भीतर कवि - हृदय एवं कला - संगीत-प्रेमी आत्मा आरंभ से विद्यमान थी।उस युवक को तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक आंदोलन 'ब्रह्म समाज 'में शांति मिलने लगी। जिज्ञासु नरेंद्र को रामकृष्ण परमहंस का सान्निध्य मिला, इससे उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। संन्यास ग्रहण के बाद वे स्वामी विवेकानंद बने और भारत भ्रमण के दौरान देश की दारुण सामाजिक स्थिति, निर्धनता और

दासता को निकट से देखा। 1893 में शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में उनका ऐतिहासिक भाषण विश्वविख्यात हुआ। उनका निधन 4 जुलाई 1902 को मात्र 39 वर्ष की आयु में हुआ, किंतु इस अल्प जीवन में उन्होंने जो वैचारिक, आध्यात्मिक और साहित्यिक विरासत छोड़ी, वह अमर है।

स्वामी विवेकानंद का कवि-व्यक्तित्व :

विवेकानंद का काव्य कर्म किसी साहित्यिक प्रदर्शन का परिणाम नहीं था, अपितु वह उनके अंतरंग जीवन-संघर्ष, साधना और आत्मानुभूति से उपजा हुआ था। इसलिए उनका काव्य आज भी प्रेरणा, शक्ति और आत्मविश्वास का स्रोत बना हुआ है।

स्वामी विवेकानंद का कवि-व्यक्तित्व उनके दार्शनिक व्यक्तित्व से अभिन्न है। वे भावुकता के कवि नहीं, अपितु चेतना, शक्ति और आत्मगौरव के कवि हैं। उनका काव्य, वेदांत-दर्शन का काव्यात्मक रूपांतरण है, राष्ट्रीय पुनर्जागरण की हुंकार है, आत्मबल और निर्भीकता का उद्घोष है, मानव-एकता और विश्वबंधुत्व का संदेश है। उनकी कविताओं में करुणा है, पर दुर्बलता नहीं; भक्ति है, पर पलायन नहीं; और अध्यात्म है, पर कर्महीनता नहीं।

कविताओं में काव्य पक्ष तथा आध्यात्मिक पक्ष दोनों प्रबल :

उनकी कविताएँ सौन्दर्य शास्त्र की तीव्रता और आध्यात्मिक उन्नति से भरी हुई हैं। उनकी अनेक कविताएँ, जो अँग्रेजी में हैं, उनके पश्चिमात्य तथा हिन्दुस्तान के अनुयायियों के नाम लिखे पत्रों के अंग हैं। स्वामी विवेकानंद ने संस्कृत-साहित्य के कुछ उत्कृष्ट श्लोकों का हिन्दी अनुवाद भी किया है। अनुवाद अत्यंत स्तरीय, प्रभावी तथा मूलभावना के अनुरूप है। हिन्दी-बंगाली में रचित उनकी कविताएँ प्रादेशिक भाषा-साहित्य की उज्ज्वल रत्न हैं। स्वामी विवेकानंद द्वारा रचित भक्ति गीत अथवा भजन रामकृष्ण मठों में बड़े ही भक्ति भाव से गाए जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद की प्रमुख कृतियाँ :

स्वामी विवेकानंद की रचनाएँ गद्य और पद्य दोनों रूपों में उपलब्ध हैं।

'विवेकलहरी 'स्वामी विवेकानंद जी द्वारा रचित कविताओं का एक प्रमुख काव्य-संग्रह है, जिसमें अंग्रेजी, संस्कृत और बंगला की अनूदित कविताएँ सम्मिलित हैं। इसके काव्यानुवादक हिन्दी के महान कवि द्वय सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला 'तथा सुमित्रानंदन पंत हैं। उन्होंने काव्य और लेख के साथ ढेरों पत्र लिखे। अन्य ग्रंथों में ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, राज योग, वर्तमान भारत, आविवार कथा, प्राच्य ओ पाश्चात्य तथा परिव्राजक आदि उल्लेखनीय हैं। यद्यपि ये गद्यात्मक ग्रंथ हैं, पर इनमें काव्यात्मक सौंदर्य और प्रतीकात्मक भाषा प्रचुर है।

स्वामी जी हिन्दी, बंगला, अँग्रेजी के साथ संस्कृत भाषा के भी विद्वान थे। उन्होंने संस्कृत मे मंत्र - स्तोत्र की रचनाएँ की हैं । श्री शंकराचार्य के निर्वाणषट्कम् स्तोत्र का आंशिक अनुवाद स्वामी जी ने अँग्रेजी में किया था।

स्वामी विवेकानंद जी द्वारा रचित 'आमंत्रणम्','शिवस्तोत्रम्','अम्बास्तोत्रम्', 'नासदीय सूक्त', 'श्रीरामकृष्ण प्रणामः,' 'श्रीरामकृष्ण - स्तोत्राणि' हैं। स्वामी जी ने जितनी कविताएँ बंगला में लिखीं, कहीं अधिक कविता अँग्रेजी में लिखीं। उन्होंने कुछ अँग्रेजी कविताओं का स्वयं बंगला में अनुवाद किया है।

कुछ मौलिक कविताएँ के उद्धरण :

काव्य-साहित्य को विवेकानंद की प्रथम देन 'ईश्वर के अन्वेषण में 'नामक कविता है। यह कविता प्राध्यापक जॉन हेनरी ह्वाइट के नाम लिखे पत्रों में पहली बार प्रकाशित हुई थी। उस पद्य के एक भाग में उनकी काव्य-प्रतिभा और कल्पना-शक्ति, चरम सीमा का स्पर्श कर चुकी है-

"चन्द्रमा की शीतल किरणों
प्रकाशमान नक्षत्र
दिनकर का उज्ज्वल प्रकाश
इन सबसे उसकी सुंदरता,
शक्ति की प्रतिच्छाया मात्र है।
प्रशांत गंभीर प्रातःकाल, ढली संध्या

दुग्ध फेन के समान उभरता असीम सागर
नैसर्गिक सुषमा, पक्षियों का कलरव
इन सब में मैं वही देखता हूँ।"

'स्वदेशी का गान 'शीर्षक कविता में स्वामी विवेकानंद ने सर्वअंग परित्याग की महत्ता बताई है। इस पद्य में उन्होंने भौतिक विश्व से मुक्त प्राणी द्वारा अनुभूत किए जाने वाले आध्यात्मिक आनंद का परिचय दिया है-

"पृथ्वी शशि रवि से पहले,
धूमकेतु - नक्षत्रों से भी पहले,
कालोत्पत्ति के अत्यंत पहले मैं था,
अब मैं हूँ,आगे भी रहूँ।"

'समाप्त मेरी कहानी 'शीर्षक कविता में स्वामी विवेकानंद ने मानव जीवन की नश्वरता और उसके अनुभवों को स्पष्ट कर 'मायावाद 'का समर्थन किया है। जुलाई ,1895 में विवेकानंद के द्वारा न्यूयार्क के सहस्त्र दीप उद्यानवन में बैठकर रचा गया गीत है - 'सन्यासी का गीत'। इस अँग्रेजी कविता का हिन्दी काव्यानुवाद सुमित्रानंदन पंत ने किया है। यह लंबी कविता है, जो **ब्रह्मवादिन (अँग्रेजी)** पत्रिका के अंक 2,सितंबर, 1895 में प्रथम बार प्रकाशित हुई थी, उसका मात्र एक छंद प्रस्तुत है -

छेड़ो हे वह गान, अनंतोद्भव अबंध वह गान,
विश्व-ताप से शून्य, गह्वरों में गिरि के अम्लान
निभृत अरण्य प्रदेशों में जिसका शुचि जन्मस्थान,
जिनकी शांति न कनक काम-यश-लिप्सा का निःश्वास
भंग कर सका, जहाँ प्रवाहित सत् चित् की अविलास
स्रोतस्वनी, उमड़ता, जिसमें वह आनंद अयास,
गाओ, बढ़ वह गान, वीर सन्यासी, गूँजे व्योम।
ओम् तत्सत् ओम्!

यह कविता विवेकानंद के जीवन-दर्शन की घोषणा-पत्र है। इसमें त्याग, निर्भीकता और आत्मस्वरूप की पहचान का उद्घोष है तथा उन्होंने 'सर्व-संग परित्याग' के सिद्धांत का प्रभावी ढंग से प्रतिपादन किया है।

इस कविता में संन्यासी को निर्भय होकर संसार के बंधनों से मुक्त होने और आत्मसत्ता की अनुभूति करने का आह्वान है। यह कविता भारतीय युवकों में आत्मबल और संन्यास-भावना का संचार करती है। **'काली माता'** कविता मूल अँग्रेजी कविता Kali the mother के काव्यानुवादक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हैं, उसकी कुछ पंक्तियाँ उद्धृत हैं -

आधि - व्याधि विखेरती, ऐ
नाचती पागल हुलसकर
आ, जननि, आ जननि, आ, आ!
नाम है आतंक तेरा,
मृत्यु तेरे श्वास में है,
चरण उठकर सर्वदा को
विश्व एक मिटा रहा है,
समय तू है, सर्वनाशिनि,
आ, जननि, आ जननि,आ, आ!

'प्रकाश' शीर्षक (द लाइट) का भावानुवाद सुमित्रानंदन पंत जी के शब्दों में इस प्रकार है -

"मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ
और आगे भी,
और देखता हूँ कि सब ठीक है।
मेरी गहरी से गहरी व्यथाओं में
प्रकाश की आत्मा का निवास है।"

'शांति 'शीर्षक कविता में निर्जन में साधना की मनःस्थिति का चित्रण अत्यंत भावप्रवणता से किया है, कुछ पंक्तियाँ मननीय हैं-

जो दो प्राणों के बीच मृत्यु है,
और दो तूफानों के बीच एक स्तब्धता है
वह शून्य, जहाँ से सृष्टि आती है
और जहाँ वह लौट जाती है।
वही अश्रुबिन्दु का अवसान होता है,
प्रसन्न रूप को प्रस्फुटित करने को
जहाँ जीवन का चरम लक्ष्य है,
और शांति ही एकमात्र शरण है।

इसी प्रकार 'जाग्रत भारत को ', 'अज्ञात देवदूत '. 'जाग्रत देवता ', 'ओ स्वर्गीय स्वप्न ', 'मेरा खेल खत्म हुआ ', 'प्रबुद्ध भारत ', 'प्याला', 'चौथी जुलाई के प्रति ', 'मंगलाशीष'' 'किसे दोष दूँ? ''इत्यादि भावपूर्ण एवं गंभीर कविताएँ स्वामी विवेकानंद जी की विलक्षण कवित्व - शक्ति के प्रमाण है।

बंगला काव्य - रचनाएँ :

स्वामी जी बंगला भाषा में भी भावपूर्ण रचनाएँ की हैं, जिसमें अध्यात्म एवं दर्शन भाव की प्रमुखता है। उनकी 'सखार प्रति '(सखा के प्रति) लंबी कविता का एक अंश भावानुवाद रूप मे प्रस्तुत है-

गूँज रहा रव घोर स्वार्थ का, कहाँ शांति का शुचि आकार।
कहाँ? नरक प्रत्यक्ष स्वर्ग है - कौन छोड़ सकता संसार?
कर्मपाश से बँधा गला - वह क्रीत दास जाए किस ओर?
(सोचा, समझा है मैंने पर. एक उपाय न देखा और।

'प्रलय वा गंभीर समाधि 'नामक बंगाली कविता संगीत रूप में रचित गान है, इसमें स्वामी जी ने स्वयं आध्यात्मिक अनुभूति के आधार पर ध्यान की एक के बाद एक चार अवस्थाओं का वर्णन किया है-

सूर्य भी नहीं है, ज्योति - सुंदर शशांक नहीं,
छाया - सा व्योम में, यह विश्व नजर आता है।

मनोआकाश अस्फुट, भासमान विश्व वहाँ,
अहंकार - स्रोत ही में. तिरता डूब जाता है।

धीरे-धीरे छाया दल. लय में समाया जब,
धारा निज अहंकार, मंदगति बहाता है।

बंद वह धारा हुई, शून्य से मिला है शून्य,
'अवाङ् मनस गोचरम्',वह जाने जो ज्ञाता है।

अन्य बंगला कविताओं यथा- 'गाई गीत शुनाते तोमाय,' 'नाचुक ताहते श्यामा ' 'प्रलय वा गंभीर समाधि ''सृष्टि ''सागर वक्षे'आदि में,जगत का नयनाभिराम माधुर्य, कोमल प्रवणता, पुरुष एवं प्रकृति समन्वय इत्यादि का सजीव चित्रण दृष्टव्य है।

संस्कृत में रचित कविताएँ-

स्वामी विवेकानंद संस्कृत के महान विद्वान एवं वैदिक ग्रंथों के ज्ञाता थे। उन्होंने संस्कृत में अनेक उत्कृष्ट कविताएँ रची हैं।स्वामी जी द्वारा रचित मंत्र संस्कृत स्तोत्रों को पढ़कर उनकी काव्य - प्रतिभा का परिचय मिलता है। निम्नलिखित 'प्रणाम मंत्र 'स्वामी जी ने मौखिक ही बनाया था-

स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्म स्वरूपिणे।
अवतार वरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः।।

(धर्म के प्रतिष्ठाता एवं सकल धर्मस्वरूप, सब अवतारों में श्रेष्ठ, हे रामकृष्ण. तुम्हें प्रणाम है।)

स्वामी जी द्वारा रचित तीन स्तोत्र एवं 'श्रीरामकृष्ण प्रशस्तिः'अत्यंत उद्बोधक है। अपने गुरुदेव श्रीरामकृष्ण परमहंस की वंदना के दो श्लोकों का यहाँ उल्लेख करना समीचीन होगा।

यस्य वीर्येण कृतिनो वयं च भुवनानि च।
रामकृष्ण सदा वन्दे सर्वंस्वतंमीश्वरम्।।

(जिनकी शक्ति से हम सभी तथा समस्त लोक कृतार्थ है, उन शिवस्वरुप, स्वाधीन ईश्वर श्रीरामकृष्ण की में सर्वदा वन्दना करता हूँ।)

कूर्मास्तारकचर्वणम् त्रिभुवनमुत्पाटयामो बलात्।
किं भो न विजानास्यस्मान्, रामकृष्णदासा वयम्।।

(हम तारों को चबा डालेंगे. त्रिभुवन को बलपूर्वक उखाड़ देंगे। क्या हमें जानते नहीं?, हम रामकृष्ण के दास हैं।)

उन्होंने श्रीशंकराचार्य के 'निर्वाणषट्कम् स्त्रोत का आंशिक अनुवाद अँग्रेजी में (सिक्स स्टैंजाज आन निर्वाना) नामक कविता में किया था, जिसका फद्यानुवाद सुमित्रानंदन पंत ने किया था। ऐसे ही स्वामी विवेकानंद ने 'नासदीय सूक्त (ऋग्वेद 10. 129.1-7) 'का अँग्रेजी में अनुवाद कविता रूप में किया था, जिसका हिन्दी में भावानुवाद सुमित्रानंदन पंत ने किया।

जयपुर के प्रवास काल में स्वामी जी मैसूर आए। वहाँ के राजमहल में अतिथि के रूप में ठहरे। एक दिन पण्डितों की एक विराट सभा हुई, जिसमें स्वामी जी को कुछ बोलने के लिए अनुरोध किया गया। स्वामी जी ने संस्कृत में सार्वभौम वेदान्त के विषय में ऐसा हृदयस्पर्शी भाषण दिया कि चारो ओर से धन्य! धन्य! की ध्वनि गूँज उठी।

स्वामी जी के लिखे हुए 3-4 संस्कृत - पत्र भी उपलब्ध हैं। उनमें से श्री शरतचन्द्र चक्रवर्ती को लिखित पत्र में स्वामी जी ने अपने गुरु की प्रशस्ति करते हुए लिखते हैं कि. 'लोकगुरु महासमन्वयाचार्य श्री 108 रामकृष्ण आविर्भवतु तव हृदयोदेशे, कितनी उदात्त भावना है। यह पत्र दार्जिलिंग से 19 मार्च, 1897 को लिखा गया है। पत्र का शुभारम्भ 'ऊँ नमो भगवते रामकृष्णाय 'से किया गया है। वे अपने सम्बोधनों में **अभिन्नहृदयः, प्रेमास्पदः, कल्याणीया, अभिन्न हृदयेशु, स्नेहाशी**ः इत्यादि पदों से करते थे। उन्होंने युवाओं को जागरण मंत्र दिया, जो कठोपनिषद् (1/3/14) से लिया गया है- **"उतिषठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।"**(उठो, जागो और अपने चरम आदर्श को प्राप्त करो।)

यह पंक्ति केवल उपदेश नहीं, अपितु विवेकानंद की काव्य - आत्मा का अमर उद्घोष है।

विवेकानंद का काव्य केवल आध्यात्मिक नहीं, अपितु राष्ट्रबोध, मानवतावाद, सामाजिक और कल्याण - चेतना से भी परिपूर्ण है। वे भारत की दासता से व्यथित थे और अपने काव्य के माध्यम से युवकों को जागृत करना चाहते थे। उनकी काव्य-शैली ओजस्वी और घोषणात्मक, प्रतीकात्मक और दार्शनिक है। उनकी भाषा सरल किंतु प्रभावी एवं भाव और विचार का संतुलन लिए हुए है। उनकी भाषा में वैदिक गरिमा, आधुनिक बोध और वैश्विक दृष्टि का अद्भुत समन्वय मिलता है।

निष्कर्ष :

अस्तु, स्वामी विवेकानंद केवल संन्यासी या विचारक ही नहीं, अपितु एक महान कवि भी थे। उनका काव्य आत्मा को जागृत करता है, मनुष्य को निर्भीक बनाता है और राष्ट्र को दिशा देता है। उनकी कविताएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितनी उनके जीवनकाल में थीं। विवेकानंद का काव्य हमें सिखाता है कि कविता केवल सौंदर्य नहीं, अपितु शक्ति भी हो सकती है; केवल भाव नहीं, दृष्टि भी; और केवल कला नहीं, जीवन-दर्शन भी है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने स्वामी जी की काव्य - प्रतिभा से प्रभावित होकर कहा था- **"विवेकानंद जी की जीभ में अग्निबाण स्थापित है"।** वर्तमान समय युवाओं का है और स्वामी जी का पावन जन्मदिन 'राष्ट्रीय युवा - दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज युवा जहाँ ऊर्जा से ओतप्रोत हैं, वहीं अवसाद ग्रस्त भी। विवेकानंद जी से प्रेरणा लेकर उसे अपने अन्दर '**विवेक**' लाना होगा, तभी वह '**आनन्द**' पाएगा। अतः स्वामी विवेकानंद को इस रूप में समझना आज की आवश्यकता है।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर,विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585
ईमेल - gsvaish51@gmail.com